HIN3B14b_cours-08-2013-03-26

हिन्दी की बोलियाँ

जॉर्ज ग्रियर्सन ने हिन्दी-भाषी इलाके को दो भागों में बाँटा - पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी। उनके अनुसार पश्चिमी हिन्दी की पाँच बोलियाँ है - (1) हिन्दोस्तानी (यानी 'हिन्दुस्तानी' यानी 'खड़ी बोली') (2) बाँगरू (3) ब्रजभाषा (4) कन्नौजी तथा (5) बुन्देली। और पूर्वी हिन्दी की तीन बोलियाँ हैं - (1) अवधी (2) बघेली तथा (3) छत्तीसगढ़ी। उन्होंने 'राजस्थानी', 'भोजपुरी' और बिहार की 'मैथिली', 'मगही' बोलियों को हिन्दी इलाके में नहीं रखा। लेकिन कुछ विद्वान भोजपुरी को भी हिन्दी की बोली मानते हैं।

पूर्वी तथा पश्चिमी हिन्दी में अन्तर

[क] उच्चारण तथा शब्द-रूप -

(1) पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी में 'अ' का उच्चारण अलग होता है। पूरब की तीन भाषाओं - बँगला, उड़िया तथा असमिया - में 'अ' का उच्चारण 'ओ' की तरह होता है। किन्तु ज्यों-ज्यों हम पश्चिम (बिहारी बोलियों) की ओर बढ़ते जाते हैं, त्यों-त्यों 'अ' का विलम्बित उच्चारण कम होता जाता है और पश्चिमी भोजपुरी में तो यह विवृत हो जाता है। पूर्वी-हिन्दी में भी 'अ' का उच्चारण पश्चिमी भोजपुरी की ही भाँति होता है। पश्चिमी हिन्दी में 'अ' के स्थान पर पंजाबी का प्रभाव पड़ने लगता है और यह अपेक्षाकृत और भी विवृत हो जाता है।

(2) पश्चिमी हिन्दी की 'ड़', 'ढ़' मूर्धन्य (rétroflexe) ध्वनियाँ पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में 'र' तथा 'र्.ह' हो जाती हैं। जैसे पश्चिमी हिन्दी 'तोड़े', पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'तोरे'। हालाँकि इसके अपवाद भी हैं। जैसे पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी 'बाढ़', भोजपुरी 'बाढ़ि'।

(3) पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी और भोजपुरी में 'र', 'ल' के परिवर्तन में काफी अंतर है। जैसे, पश्चिमी हिन्दी 'फल' किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'फर'। दरअसल पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में मागधी के प्रभाव के कारण 'र' के स्थान पर हर जगह 'ल' ही होना चाहिए था; किन्तु पश्चिम की आदर्श भाषा तथा शिष्ट उच्चारण के कारण ऐसा नहीं हो पाया है और कहीं-कहीं तो पश्चिम का इतना अधिक प्रभाव पड़ा है कि जहाँ 'ल' सुरक्षित रहना चाहिए 'र' हो गया है। जैसे - पश्चिमी हिन्दी 'हल', किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'हर'। पश्चिमी हिन्दी 'जलै' किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'जरे'।

(4) पश्चिमी हिन्दी में शब्द के बीच में आने वाला 'ह' अक्सर गायब हो जाता है, किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में यह संधि के अक्षर के रूप में मिलता है। जैसे - पश्चिमी हिन्दी 'दिया', पूर्वी हिन्दी 'देहेसि', भोजपुरी 'दिहलसि'।

(5) पश्चिमी हिन्दी में शब्द के शुरु में 'य', तथा 'व' आता है, किन्तु पूर्वी-हिन्दी में भोजपुरी में यह 'ए' तथा 'ओ' में बदल जाता है और कभी-कभी संधि के अक्षर रूप में, बीच में, 'ह' भी प्रयुक्त होता है। जैसे - पश्चिमी हिन्दी (ब्रजभाषा) 'यामें', 'वामें', किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'एमें', 'एहमें', 'ओमें', 'ओहमे'।

(6) पश्चिमी हिन्दी में अक्सर दो स्वर एक साथ नहीं आते, जबकि पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में इस तरह का कोई बंधन नहीं है। इसका एक परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी हिन्दी के 'ऐ' तथा 'औ', पूर्वी हिन्दी में तथा भोजपुरी में 'अइ' एवं 'अउ' में बदल जाते हैं। जैसे - पश्चिमी हिन्दी 'कहै', पूर्वी हिन्दी 'कहइ', पश्चिमी हिन्दी 'और', 'मौर' पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'अउर', मउर', आदि।

(7) पश्चिमी हिन्दी के आकारान्त (तथा ब्रज के ओकारान्त) शब्द पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में अकारान्त अथवा व्यंजनान्त हो जाते हैं। जैसे - पश्चिमी हिन्दी 'बड़ा' (ब्रज, बड़ौ, बड़ो), किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा

भोजपुरी बड़' अथवा 'बड़्' - [अवधी 'बड़ मनई', भोजपुरी 'बड़ अदमी']। इसी तरह पश्चिमी हिन्दी (खड़ी बोली - 'भला', ब्रज 'भलौ', 'भलो', लेकिन पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'भल', 'भल्'।

(8) पश्चिमी हिन्दी में आकारान्त शब्द का रूप कर्ता (sujet) में सुरक्षित रहता है, किन्तु तिर्यक (oblique) में 'आ', 'ए' में बदल जाता है। पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में कर्ता तथा तिर्यक दोनों में आकारान्त रूप ज्यों-का-त्यों बना रहता है। यानी उसमें कोई बदलाव नहीं आता।

जैसे - पश्चिमी हिन्दी

कर्ता एकबचन घोड़ा तिर्यक (oblique) - एकबचन घोड़े

पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी -

कर्ता-एकबचन घोड़ा तिर्यक (oblique) - एकबचन घोड़ा

[ख] सर्वनाम (pronom)

(1) पश्चिमी हिन्दी की खड़ी बोली तथा ब्रजभाषा में संबंधवाचक सर्वनामों (relatif) के रूप 'जो', 'सो' तथा प्रश्नवाचक के रूप 'कौन' होते हैं, किन्तु पूर्वी हिन्दी में ये 'जे', 'के' तथा भोजपुरी में 'जवन', 'कवन' हो जाते हैं।

(2) स्वत्वबोधक सर्वनाम (pronom possessif) के रूप के मध्य में पश्चिमी हिन्दी में 'ए' रहता है, किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में यह 'ओ' में बदल जाता है। जैसे - पश्चिमी हिन्दी 'मेरा', किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी 'मोर'।

(3) पश्चिमी हिन्दी (खड़ीबोली) के पुरुषवाचक सर्वनाम (pronom personnel) के एक वचन (singulier) 'मैं' तथा बहुवचन (pluriel) के 'हम' रूप होते हैं। किन्तु पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में 'हम' का प्रयोग एक वचन में ही होता है। इसके बहुवचन के लिए 'लोग' जोड़ा जाता है। भोजपुरी में बहुवचन का रूप 'हमनिका' होता है।

[ग] परसर्ग (postposition)

संज्ञा तथा सर्वनाम के रूपों में पूर्वी हिन्दी तथा भोजपुरी में समानता है। दोनों के परसर्ग भी एक ही हैं, लेकिन कहीं-कहीं इनमें फर्क भी है। उदाहरण के लिए 'कर्म' तथा 'सम्प्रदान' में पूर्वी हिन्दी में 'का' तथा 'काँ' परसर्गों का प्रयोग होता है, लेकिन भोजपुरी तथा अन्य बिहारी बोलियों में यह 'के' तथा 'कें' रूप में मिलते हैं। इसी प्रकार अधिकरण कारक में पूर्वी हिन्दी में 'मा' तथा 'माँ' अनुसर्ग प्रयुक्त होते हैं, किन्तु बिहारी बोलियों में ये 'मे', 'में' का रूप धारण कर लेते हैं। यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि अनुसर्ग रूप में 'का' तथा 'मा' पूर्वी हिन्दी की विशेषताओं में से हैं।

पश्चिमी हिन्दी की सबसे बड़ी विशेषता है 'ने' परसर्ग का प्रयोग। पूर्वी हिन्दी तथा बिहारी (भोजपुरी तथा बिहारी की अन्य बोलियाँ - मैथिली, मगही) में 'ने' का एकदम अभाव है। उदाहरण के लिए, पश्चिमी हिन्दी में कहा जाता है - 'उसने कहा' जबकि अवधी में 'उ किहिसि' तथा भोजपुरी में 'उ कइलसि' और मैथिली में 'उ कइलक' हो जाता है।

[घ] क्रियारूप

क्रियारूपों के सम्बन्ध में तो पूर्वी हिन्दी पश्चिमी हिन्दी से और भी दूर है। 'मैं हूँ' के लिए पूर्वी हिन्दी में 'अहेउँ' तथा 'आहेउँ' होता है। इसके अलावा मुख्यरूप तीन कालों - सम्भाव्य वर्तमान, भूत तथा भविष्य - के रूपों की उत्पत्ति तो संस्कृत के वर्तमान काल से हुई है और इसके रूप प्रायः सभी नव्य आर्य भाषाओं में एक ही हैं।